

भील जनजाति में महिलाओं की सामाजिक स्थिति (झाबुआ जिले के विशेष सन्दर्भ में)

Dr. Chanchal Barbele*

Research Scholar, Vikram University, Ujjain

सार – सामाजिक व्यवस्था मानव जीवन की सुसंस्कृत और सभ्य प्रगति का द्योतक है। मानवीय समाज की परिकल्पना में महिला एवं पुरुष दोनों ही समान स्थान पाते हैं। जिनके मध्य अधिकारों, कर्तव्यों, सेवा और समर्पण के सामंजस्य से ही समाज उन्नति की ओर अग्रसर बना रहता है। सामाजिक दूरी को सतत और गतिमान बनाए रखने के लिए किसी एक भी पक्ष को उच्च अथवा निम्न स्तर प्रदान करना सर्वथा अनुचित प्रतीत होता है। भारतवर्ष के संदर्भ में देखा जाए तो यहां संस्कृति, परंपराओं, वेशभूषा, खानपान, रीति-रिवाजों और रहन-सहन की व्यवस्थाओं के बीच दो प्रकार का समाज निवासरत रहता है। पहला जो शहर या शहर के आसपास सुविधाओं से सुसज्जित आधुनिक परिवेश में रहता है, जहां महिला एवं पुरुष के बीच समनता के प्रति जागरूक दृष्टिकोण का भाव रहता है। वहीं दूसरी ओर तकनीकी चकाचौंध से दूर सघन वन क्षेत्रों में अपना जीवन यापन करने वाले लोग, जहां समाज में महिला-पुरुष का सामंजस्य आधुनिक कहे जाने वाले समाज से कहीं श्रेष्ठ प्रतीत होता है। इस समाज में महिलाएं पारिवारिक कार्यों से लेकर आर्थिक गतिविधियों में भी पुरुष का साथ एक कदम आगे बढ़कर देती हैं। यह जनजाति, समाज में महिलाओं के मूलभूत अधिकारों को उन्हें देने की स्वीकृति प्रदान करती है, जो आधुनिक कहे जाने वाले समाज से कहीं ज्यादा श्रेष्ठ है। अपने वर का चयन खुद करना, विधवा विवाह की स्वतंत्रता, पारिवारिक कार्यों में पूर्ण सहयोग इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। मध्यप्रदेश राज्य के झाबुआ जिले और उसके आसपास पाई जाने वाली भील जनजाति वर्ग की महिलाओं के सामाजिक व आर्थिक पक्ष को उद्घृत करते हुए उन्हें वर्तमान की आधुनिक उन्नत, आर्थिक व शैक्षणिक रूप से संपन्न धारा में लाने के लिए किए जाने वाले उपाय व सार्थक प्रयास ही इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है, जिससे उनकी पूरा संस्कृति के संरक्षण के साथ ही उनकी हस्त कला को व्यावसायिक स्तर प्राप्त हो सके।

-----X-----

प्रस्तावना

समाज व्यवस्था मानव जीवन की चिरंतन और शाश्वत आधारशिला है। बगैर समाज व्यवस्था के हम सुसंस्कृत और सभ्य समाज की कल्पना ही नहीं कर सकते हैं। व्यवस्था का आशय एक संरचना के अंतर्गत एकाधिक निर्माणक इकाइयों या तत्वों की उस निश्चित प्रतिमानात्मक सम्बद्धता से है, जो कि एक प्रकार्यात्मक संबंध के आधार पर उन इकाइयों को एक सूत्र में बांधती है तथा उन्हें क्रियाशील व गतिशील करती है।

मार्शल जोन्स ने व्यवस्था के संबंध में लिखा है कि सामाजिक व्यवस्था वह स्थिति है, जिनमें कि समाज की विभिन्न क्रियाशील इकाइयां आपस में तथा समग्र समाज के साथ एक अपूर्ण ढंग से संबंधित होती है। मानवीय समाज की व्यवस्था महिला और पुरुष दो धुरियों पर टिकी होती है, जिसके बीच बनने वाले सामंजस्य से ही परिवार संतुलित प्रगति की ओर

गतिमान होता है। इनमें से किसी को भी अनदेखा किया जाए तो सामाजिक व्यवस्था अस्थिर सी प्रतीत होती है।

आदिकाल से ही भारतीय समाज पुरुष प्रधान रहा है, जिसके बाद भी महिलाओं ने अपनी पहचान हर युग में बनाई है और अपनी उपस्थिति का आभास कराया है। वैदिक युगों में अपाला घोष जैसी विदुषियों ने अपने आप को अमृतत्व प्रदान किया। तदोपरान्त गौतमी पुत्र सातकर्णी ने अपने नाम के आगे माता का नाम जोड़कर मातृ पूजा का संकेत दिया है। शिवाजी को इतना सफल व्यक्तित्व प्रदान करने में उनकी माता जीजाबाई का अहम योगदान है।

आज तकनीकी युग और इस आधुनिक समाज में जहां एक ओर महिलाएं पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपनी पहचान बनाने में सफल रही हैं वहीं दूसरी ओर मध्यभारत जिसे जनजातियों का घर भी कहा जाता है, जिसमें महिलाओं

का अपना विशिष्ट स्थान है। अंतः प्रस्तुत शोधपत्र में भील समाज में महिलाओं की स्थिति और उनकी समस्याओं के लिए सकारात्मक सुझावों को प्रस्तुत किया गया है।

भौतिक संस्कृति

झाबुआ जिले में निवासरत ग्रामों में भीली जनजाति के अलावा अन्य जनजातियां भी निवास करती हैं। इनके लिए घर प्रायः रैन-बसेरा ही होता है। दिन में उनकी अधिकांश क्रियाएं प्रायः घर के बाहर ही सम्पन्न होती हैं। घास-फूस द्वारा बनाए गए मकानों की छत ढालू होती है। समय-समय पर घर की दीवारों को गोबर या चूने से पोता जाता है। घर के आंगन में मकान से सटाकर एक ओर पशुओं को रखने का स्थान होता है। संपूर्ण घर के क्रियाकलाप महिलाओं द्वारा ही संभाले जाते हैं। स्त्रियां घाघरा चोली और चुंदड़ी या साड़ी पोलका पहनती हैं। आभूषणों में मुख्यतः हाथों में चूड़ी, नाक में नाथड़ी-कांटा, पायल, वाकला, चुड़ा, पैर में बिछिया, कमर में करदौना आदि अनेक आभूषण पहनती हैं। गुदना गुदवाना इनका प्रमुख आभूषण माना जाता है। गुदना ऐसा अलंकरण है जो कि बिना किसी अतिरिक्त भार के दैनिक जीवन में भी व्यक्ति को सजा-संवरा बनाए रखता है।

गेहूं, मक्का, बाजरा, दाल, चावल वहीं मांसाहार में बकरा, मुर्गा, भेड़, मछली और विभिन्न प्रकार के पक्षियों का मांस खाया जाता है। अभाव में जीवन यापन करने वाले जनजातिय महिलाएं गेहूं को मोटा पीसकर शक्कर या गुड़ के साथ पानी डालकर पकाती हैं। यहां विवाह में शराब अनिवार्य होती है। महिलाएं त्योहार पर खुशी से शराब का सेवन कर झूमती हैं। ये महिलाएं धूम्रपान की भी शौकिन होती हैं। तम्बाकू को चिलम और हुक्के में भरकर पीने का प्रचलन भी इन महिलाओं में देखने को मिलता है। अतिथि को बीड़ी पिलाना आतिथ्य का सूचक है।

आर्थिक जीवन

भील महिलाएं अत्यंत श्रम करने वाली होती हैं। ये कृषि कार्य में पुरुषों का हाथ बटाती हैं। पशुओं को जंगल में जाकर चराना व दूध दुहना इनके दैनिक कार्य हैं। मजदूरी करना कंडे (उपले) बेचना, जंगलों में रोटी बांधकर ले जाना, चुल्हा जलाने के लिए लकड़ियां इक्की करना आदि कार्य महिलाएं ही करती हैं। इनकी आर्थिक स्थिति अत्यंत ही कमजोर होती है। पुरुषों के साथ भील स्त्रियां कंधे से कंधा मिलाकर काम करती हैं, उनका यही श्रम उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करता है। चाहे कितना ही सभ्य समाज हो महिलाओं को नौकरी करने का अधिकार स्वेच्छा से नहीं देता किन्तु भील समाज में यह कुरीति देखने को नहीं मिलती और महिलाएं स्वतंत्र रूप से काम करती हैं।

जीवन चक्र

जन्म

लड़की के जन्म के समय लड़के की अपेक्षा ज्यादा खुशियां मनाई जाती हैं। इन्हें आर्थिक सुरक्षा का प्रतीक समझा जाता है। परंपरागत रूप से इस समुदाय में लड़कियों की अधिक संख्या परिवार की उच्च स्थिति की प्रतीक समझी जाती है। जन्म के उपरांत खूब गाना बजाना किया जाता है और सामूहिक दावत दी जाती है। ईश्वर का आशीर्वाद समझकर धन्यवाद दिया जाता है व पूजा अर्चना की जाती है।

विवाह

बालिकाओं को विवाह के पूर्व अपना जीवनसाथी स्वयं चुनने का अधिकार दिया जाता है। इस जनजाति में बालिकाओं का विवाह 12 से 15 साल की उम्र में कर दिया जाता है। वहीं वधू मूल्य विवाह में अनिवार्य होता है। वधू मूल्य वह राशि होती है जो विवाह के समय वर पक्ष द्वारा वधू के अभिभावकों को दी जाती है। वधू मूल्य को इस जनजाति में दापा कहते हैं। कुछ लोग इसे देज भी कहते हैं। वधू पक्ष अपनी स्वेच्छानुसार वर पक्ष को दायजा देता है। भील जनजाति में विधवाओं और परित्यक्ताओं को पुनर्विवाह करने की अनुमति प्राप्त है। प्रसिद्ध भगोरिया पर्व अपनी पसंद का लड़का ढूंढने का सबसे अच्छा माध्यम है। अतः यह कहना गलत न होगा कि परिणय के परिप्रेक्ष्य में भगोरिया हाट भील आदिवासी संस्कृति की विशिष्टता है और यह अन्य समाजों की तुलना में खुली मानसिकता का प्रतीक भी है।

मृत्यु

भील जनजाति में मृत्यु के समय पुरुषों और महिलाओं का एक ही रीति से दाह संस्कार किया जाता है। इनमें शव को जलाया जाता है। चेचक अथवा किसी संक्रामक रोग से मृत्यु होने पर प्रायः मृतक को दफनाया जाता है। मृत्यु की सूचना विशिष्ट ताल में ढोल बजाकर दी जाती है। दाह संस्कार की रीत वही है जो कि अन्य समाज में प्रचलित है।

धार्मिक जीवन

भील महिलाएं अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति की होती हैं। शिक्षित न होने के कारण इनमें रूढ़िवादिता देखने को मिलती है। घर परिवार की सुख समृद्धि के लिए या बीमारी से निजात पाने के लिए ये महिलाएं कठिन से कठिन तप करने को तैयार हो

जाती हैं। आज भी ये महिलाएं समस्त उपवासों को विधि विधान से करती हैं।

लोक कलाएं

नृत्य गीत नौटंकीया इस समाज के अभिन्न पहलू हैं, जिनमें महिलाएं बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती हैं। जैसे वारया नृत्य, नेजा नृत्य, मवरी नृत्य, भूड़ा नृत्य, यावजा गीत, डावण गीत, लावणी गीत, भित्ती लोक चित्रकला, अल्पना, गांठना एवं अन्य अनेक कलाएं हैं। हाथ से बनाए जाने वाले आभूषण, मिट्टी के बर्तन पिथौरा अन्य आकर्षक सजाने वाली वस्तुएं एकाएक आकर्षक करती हैं। अतः महिलाएं इन सबको बनाने में पारंगत होती हैं और कई महिलाएं तो इन हस्तशिल्पों का उपयोग व्यवसाय के रूप में भी करती हैं।

शिक्षण

भील महिलाओं की शिक्षा का स्तर काफी कम है। आज इसी स्तर के परिणाम स्वरूप हमें रूढ़िवादिता और अस्वस्थ्यता देखने को मिलती है। जागरूकता की कमी व मृत्युदर में बढ़ोतरी का एकमात्र कारण अशिक्षा ही है।

परिवर्तन

बाह्य संपर्क, शिक्षण, संचार तथा यातायात के साधनों के कारण बाह्य दुनिया के प्रभाव में ये महिलाएं तेजी से आ रही हैं। इनके रहन सहन, वस्त्र विन्यास, खानपान, शिक्षण, कृषि आदि के क्षेत्रों में काफी परिवर्तन आया है। परंपरागत लोक कलाएं, रीति-रिवाज धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे हैं। फलस्वरूप संस्कृति का क्षरण हो रहा है।

समस्याएं

भील समाज में महिलाएं परिवार के सभी महत्वपूर्ण उत्तरदायित्वों का निर्वहन सुचारू रूप से करती हैं। जीवन की हर डगर पर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती हैं परंतु फिर भी वह पुरुषों की दासी ही मानी जाती हैं। आज भी परिवारों में महिलाओं की स्थिति निम्नतर बनी हुई है। आज भी उसे पुरुष की अवमानना झेलनी पड़ती है। सरकार द्वारा चलाई जा रही अनेक योजनाओं जिसका उद्देश्य महिलाओं के जीवनस्तर में सुधार करना होता है, के बावजूद महिलाओं में जागरूकता की कमी है। शिक्षित न होने के कारण वे अपने अधिकारों से अवगत नहीं हो पातीं। इनके जीवनस्तर में सुधार के लिए अनेक एनजीओ चलाए जा रहे हैं। जोकि सुधार के नाम पर सरकार से व्यापक धन तो ले लेते हैं लेकिन इन योजनाओं का उचित

क्रियान्वयन नहीं कर पाते। बेरोजगारी और आर्थिक तंगी के साथ-साथ शिशु मृत्यु पर उचित नियंत्रण न हो पाना भी एक विकट समस्या है।

आदिवासी महिलाओं को ध्यान में रखकर उनकी वर्तमान स्थिति को संवारने के लिए अनेक योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। उनकी सामाजिक स्थिति पर अनेक विद्वानों द्वारा शोध भी किए जा चुके हैं। अनेक समाजसेवी संस्थाएं इनके स्तर को सुधारने का प्रयास कर रही हैं। फिर भी हमारे सामने अपेक्षित परिणाम नहीं आ पा रहे हैं, आखिर क्यों?

सुझाव

भीली महिलाओं की वर्तमान सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए और उनके अपेक्षित विकास के लिए हमें स्थानीय स्तर पर प्रयास करने चाहिए। मैंने अपने शोध के दौरान उनकी समस्याओं से निजात दिलाने के लिए कुछ उपाय सुझाए हैं। जैसे- बालिका शिक्षा के लिए अभिभावकों को जागरूक किया जाए। शासन द्वारा प्रत्येक स्तर पर शिक्षा हेतु जागरूकता अभियान चलाए जाएं। आंगनवाड़ी को प्राथमिक शिक्षा के समांतर ही रखा जाए, अर्थात् अधिक से अधिक संख्या में बालिकाओं को आंगनवाड़ी भेजा जाए। महिलाओं को घर में ही स्थायी स्तर पर रोजगार दिलवाने के लिए परंपरागत उद्योगों को स्थायी बाजार दिया जाए। जिससे यह महिलाएं हस्तशिल्प बनाकर सीधे व्यापार कर सकें। स्वास्थ्य आदि के परीक्षण हेतु प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर महिला चिकित्सक की नियुक्ति की जानी चाहिए। वहीं उनके द्वारा ग्रामीण इलाकों में शिविर लगाकर महिलाओं के स्वास्थ्य का परीक्षण किया जाना चाहिए। कुपोषण और शिशु मृत्युदर को कम करने के लिए नियमित रूप से स्वास्थ्य की जांच होनी चाहिए। उन्हीं महिलाओं में से किसी एक को, जोकि शिक्षित हो, पारिश्रमिक देकर नियुक्त किया जाना चाहिए। जोकि समय-समय पर जांच व योजनाओं की जानकारी से महिलाओं को अवगत करा सके। साथ ही एनजीओ की सहायता से कार्य का निरीक्षण भी कराया जाना चाहिए। ऐसी व्यवस्थाएं इन महिलाओं के लिए की जानी चाहिए।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि आधुनिक व पढ़े लिखे समाज की तुलना में भीली जनजाती की महिलाओं की स्थिति अधिकारों के संदर्भ में ज्यादा अच्छी है। इन्हें स्वयं का वर चुनना, विधवा परित्यक्ता, विवाह कार्य करने की

स्वतंत्रता आदि अधिकार प्राप्त हैं। वहीं दूसरी ओर अशिक्षा इनके लिए बड़ा अभिशाप बनता जा रहा है। इस कारण इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं हो पा रही है। मेरे शोध का यही उद्देश्य है कि सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं व एनजीओ का क्रियान्वयन सुचारु रूप से हो। जिससे अपेक्षाकृत परिणाम सामने लाए जा सकें। ऐसे शोध किए जाएं जिनके उपयोगी परिणाम के साथ उनके समस्याओं के निराकरण हेतु कोई भी कार्य निष्पक्षता से किया जाए व परिणाम सुधार परख हो। जिससे इनके जीवन स्तर को सुधारा जा सके।

संदर्भ

1. वर्मा एमएल-भीलों की सामाजिक व्यवस्था, निकुंज प्रकाशन बड़वानी 1995
2. पाटिल अशोक डी- भील जनजीवन और संस्कृति, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ एकादमी, 1998
3. जोशी श्रीमति पारुल- बुलेटिन, आदिम जाति अनुसंधान संस्थान भोपाल 1997
4. शर्मा ब्रह्मदेव-आदिवासी विकास एवं सैद्धांतिक विवेचन, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ एकादमी 1980
5. झाबुआ-गजेटियर मध्यप्रदेश 2001
6. राणा प्रशांत कुमार- भील जनजाती परंपराओं का समीक्षात्मक अध्ययन, शोध ग्रंथ, विक्रम विश्वविद्यालय, 2002

Corresponding Author

Dr. Chanchal Barbele*

Research Scholar, Vikram University, Ujjain